जेसी ओवेन्स

ओलंपिक हीरो

जेसी ओवेन्स

ओलंपिक हीरो

स्कूल से पहले हर सुबह, युवा जेसी ओवेन्स और उनके कोच हाई-स्कूल एथलेटिक मैदान पर मिलते थे। पैंतालीस मिनटों के लिए, किशोर जेसी ओवेन्स ट्रैक पर प्रैक्टिस करता था, उसके बाद उसे क्लास में जाना पड़ता था। जेसी, दोपहर में बाकी टीम के साथ अभ्यास करना पसंद करता। लेकिन वो ऐसा नहीं कर सकता था, क्योंकि उस समय उसे काम पर जाना होता था। वो जो पैसा कमाता था, उससे ओवेन्स परिवार को सहारा मिलता था।

कई बार युवा जेसी ओवेन्स का सुबह-सुबह अभ्यास करने का मन नहीं होता था। लेकिन कोच - चार्ल्स रिले, प्रैक्टिस के लिए हमेशा मौजूद होते थे। इसलिए युवा जेसी को भी वहां सुबह-सुबह जाना पड़ता था। जेसी को भी यह काम करने लायक लगा। जैसे-जैसे पहला सप्ताह बीता, उसने खुद को पहले से तेज और मजबूती से दौड़ते हुए महसूस किया। एक वसंत की सुबह जब उसने सौ-गज की दौड़ पूरी की तो वो मिस्टर रिले की प्रतिक्रिया को समझ नहीं पाया।

जैसे ही जेसी, फिनिशिंग लाइन पर पहुंचा, कोच रिले ने अपनी स्टॉपवॉच बंद कर दी। कोच ने एक बार फिर से अपनी घड़ी को देखा। उन्होंने दुबारा देखा, और अपना सिर हिलाया। फिर वो घड़ी को अपने कान के पास लाये, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वो वास्तव में काम कर रही थी। जेसी यह सब देख रहा था। क्या उसने कोई गलत की थी? उसने सोचा।

मिस्टर रिले ने अपनी जेब से दूरी नापने वाला टेप निकाला। उन्होंने शुरू से अंत तक की दूरी को नापा। जब मिस्टर रिले ने दूसरी बार दूरी मापी, तब जेसी भी ख़ासा हैरान हुआ।

"क्या कुछ गड़बड़ है, कोच?" जेसी ने आखिर में पूछा।

फिर मिस्टर रिले ने घबराए हुए किशोर के कंधे पर अपना हाथ रखा। "जेसी," मिस्टर रिले ने कहा, "तुमने अभी जो किया है वो किसी और हाई-स्कूल एथलीट ने आज तक नहीं किया। तुमने आज सौ-गज की रेस में विश्व रिकॉर्ड बनाया है!"

जेसी आश्चर्यचकित था। वह जानता था कि वो क्लीवलैंड, ओहियो के अन्य हाई-स्कूल के छात्र धावकों की तुलना में तेज़ गति से दौड़ सकता था। लेकिन एक विश्व रिकॉर्ड! उसे यह उम्मीद नहीं थी। जेसी समझ गया कि अभ्यास में कायम रिकॉर्ड, कभी रिकॉर्ड बुक में नहीं दर्ज़ होगा। क्योंकि उसने वो अभी-अभी किया था, इसलिए वो उस प्रदर्शन को फिर से दोहरा सकता था। उसे बस एक मौके की ज़रुरत थी।
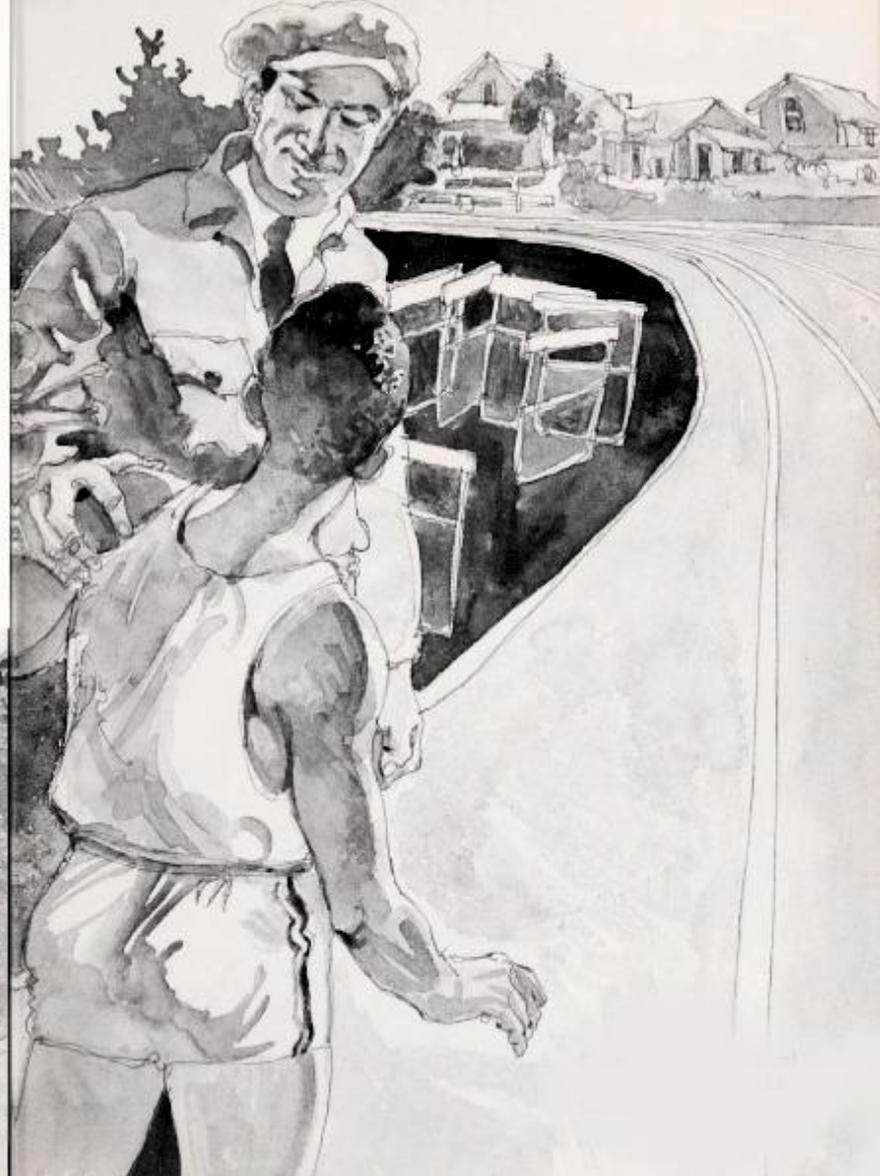
जब जेम्स क्लीवलैंड ओवेन्स का 12 सितंबर, 1913 को जन्म हुआ, तो ऐसा लगा कि वो बहुत लंबे समय तक जीवित नहीं रहेगा। किसी को इस बात की कल्पना नहीं थी कि वो बच्चा बड़ा होकर एक दिन दुनिया का सबसे तेज दौड़ने वाला इंसान बनेगा। जेसी के बचपन के साल अलाबामा के ओकविले में बड़ी गरीबी में बीते थे। उसके पिता-माता, हेनरी और एम्मा ओवेन्स, बटाई मज़दूर (शेयर-क्रॉपर) थे। वे पचास एकड़ के एक खेत में रहते थे। वहाँ वो खेत मालिक मिस्टर जॉन क्लैनन के लिए कपास उगाते थे।

मिस्टर क्लैनन के पास 250 एकड़ जमीन थी, जिस पर आठ शेयरक्रॉपर के परिवार खेती करते थे। आमतौर पर शेयरक्रॉपर, कपास के बीज भूस्वामी से ही खरीदते थे। वे बीज बोकर, फसल उगाते, और फिर फसल को काटते थे। फसल बेंचने के बाद ज़मींदार और बटाईदार मुनाफे को आपस में बांटते थे।

चाहें शेयर क्रॉपिंग एक उचित व्यवस्था लगे, लेकिन सच्चाई बहुत अलग थी। शेयरक्रॉपर, भूस्वामी से भोजन, कपड़े, औजार, बीज, और हर आवश्यकता की चीज़ खरीदने को मजबूर थे। मालिक, वर्ष के अंत में उन्हें बकाया राशि का हिसाब बताता था। उस राशि में से वो शेयरक्रॉपर के मुनाफे को घटा देता था। अक्सर शेयरक्रॉपर का नफा कम होता और मालिक पर उसका क़र्ज़ और बढ़ जाता था। साल-दर-साल, शेयरक्रॉपर और गहरे कर्ज में डूबते जाते थे। इस प्रकार की गरीबी से कोई निजात नहीं था। जो शेयरक्रॉपर, भू-स्वामी की हिसाब पद्धति के बारे में शिकायत करते उन्हे अक्सर वहां से निकल जाने को कहा जाता था।

अधिकांश शेयरक्रॉपरों की तरह, जेसी के माता-पिता भी अपने भूस्वामी को नाराज करने से डरते थे। उन्हें पता था कि मिस्टर क्लैनन उन्हें धोखा दे रहे थे, लेकिन वो कुछ नहीं कर सकते थे। वे हिसाब-किताब या पढ़ने में सक्षम नहीं थे। वो मिस्टर क्लैनन के आंकड़ों और बिलों की जांच नहीं कर सकते थे।

फिर भी मिस्टर और मिसेज ओवेन्स भाग्यशाली थे। उनके छह बलवान बच्चे थे जो खेतों में काम कर सकते थे। केवल कमज़ोर जे.सी., जो जेम्स क्लीवलैंड का उपनाम था, बीमार रहने की वजह से मदद नहीं कर पाता था। परिवार उसे खाना-पीना देता था और उसके ठीक होने का इंतज़ार करता था।

हर सर्दियों में छोटे जेसी को निमोनिया होता था। सर्दियों में खांसी और बुखार के बावजूद घर में उसे देने के लिए कोई दवा नहीं होती थी। वैसे ओकविले में कोई डॉक्टर भी नहीं था। हाँ, अगर कोई डॉक्टर होता भी तो भी ओवेन्स परिवार चिकित्सा के पैसे नहीं दे सकता था।

ओवेन्स परिवार की गरीब परिस्थिति भी, जेसी की खराब सेहत का एक कारण थी। वे कार्डबोर्ड और पुरानी लकड़ी के तख्तों से बनी झोंपड़ी में रहते थे। बारिश में छत लीक करती थी। ठंड के मौसम में, बर्फीली हवाएं घर में तेज़ी से घुसतीं थीं, जिससे बाहर और अंदर की ठंड एक-जैसी हो जाती थी।

घर में एकमात्र गर्मी, उस अलाव से आती थी जहां श्रीमती ओवेन्स भोजन पकाती थीं। झोंपड़ी में न चूल्हा था, न पानी, न बाथरूम और न ही कोई फर्नीचर। सर्दियों की रातों में, श्रीमती ओवेन्स जेसी को एक कंबल में लपेट कर उसे अलाव के बगल में सुला देती थीं।

खाने के लिए पर्याप्त भोजन की कमी एक और समस्या थी। श्रीमती ओवेन्स का झोंपड़ी के पीछे एक छोटा सा सब्जी का बाग था। बगीचे से आलू, सेम, और मकई से ही परिवार का पेट भरता था। जब जेसी का कोई भाई एक खरगोश का शिकार करता तब ही उन्हें मांस खाने को मिलता था। परिवार को मिस्टर क्लैनन के स्टोर में से बाकी सभी अन्य भोजन सामग्री खरीनी पड़ती थी. साल में केवल दो बार - ईस्टर और क्रिसमस पर ही ओवेन्स परिवार को सूअर का गोश्त खाने का आनंद मिलता था।

1919 में जब जेसी छह साल का था तो सर्दियों में उसकी तबियत खराब हो गई। उसे न केवल निमोनिया हुआ, बल्कि उसके बाएं पैर में एक बड़ी गांठ भी हो गई। जैसे-जैसे समय बीता, गांठ बड़ी होती गई। गांठ ने उसे दर्द पहुँचाया, और वो लंगड़ा कर चलने लगा। जल्द ही, जेसी चल भी नहीं पाया। माँ ने उसके पैर को गर्म पानी का सेंका लेकिन उससे भी कोई फायदा नहीं हुआ।

श्रीमती ओवेन्स को डर था कहीं वो बीमारी कहीं उनके छोटे लड़के को मार न डाले। उन्होंने जेसी को नीचे बैठाया और कहा, "देखो बेटा, इसमें तुम्हें काफी दर्द होगा, लेकिन फिर भी यह करना ज़रूरी है।" फिर श्रीमती ओवेन्स ने जेसी के एक भाई से जेसी को कसकर पकड़ने को कहा। फिर माँ ने जेसी की गांठ में चीरा लगाया। इस ऑपरेशन में भयंकर दर्द हुआ और जेसी ने रोने से बचने की लड़ाई लड़ी।

बाद में जेसी ने याद किया, "मामा को जो करना था वो उन्होंने किया। फिर बात खत्म हो गई .... लेकिन वो 'चीरा ' मेरे लिए एक अच्छी बात थी .. ..क्योंकि उस दिन के बाद से किसी भी शारीरिक चोट या बेचैनी का मुझपर कोई असर नहीं पड़ा।"
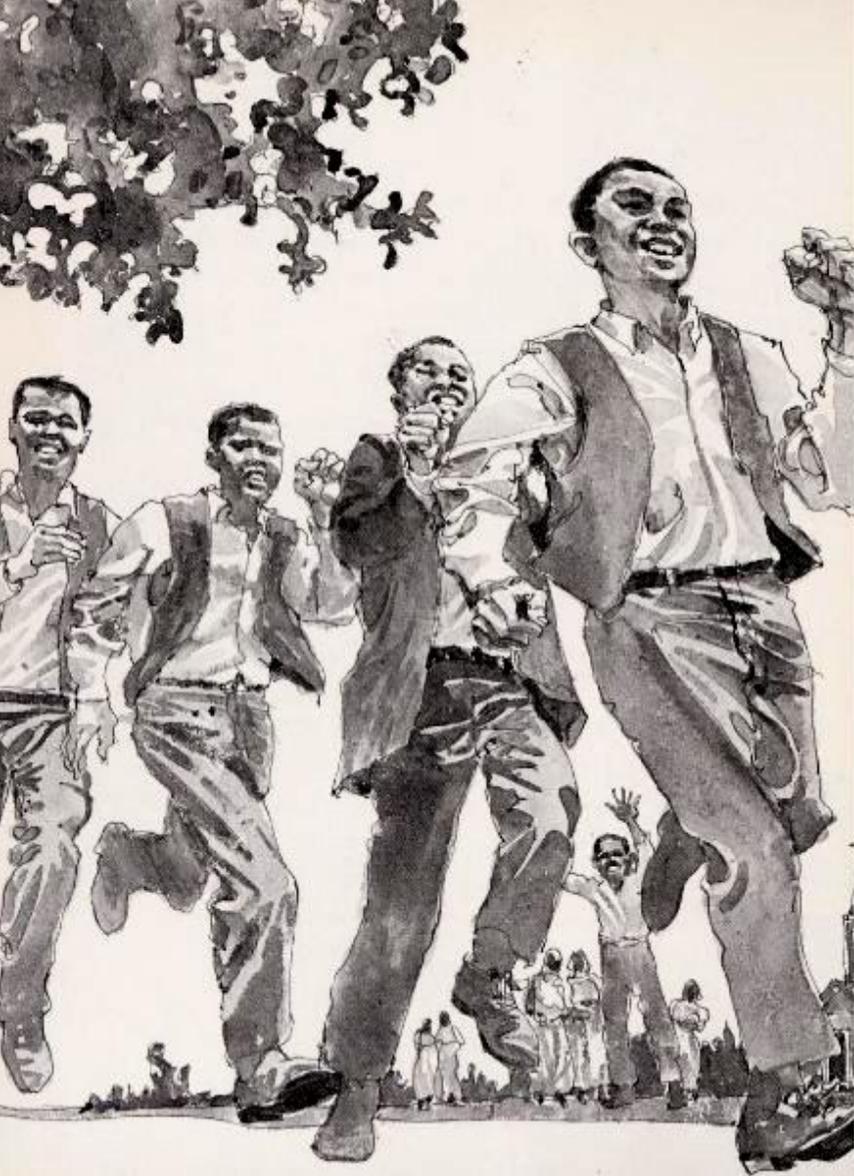
वर्षों बाद, जब जेसी ओवेन्स एक विश्व-स्तरीय धावक बना, तो वो बचपन के उस अनुभव के कारण हमेशा दर्द और थकावट को सह पाता था। चाहे वह कितना भी आहत हो, या थका हो, वो उसके पैर में गाँठ के उस ऑपरेशन के दर्द से ज़्यादा पीड़ादायक नहीं हो सकता था।

जब जेसी के पैर की गांठ गायब हुई, और सर्दी, वसंत में बदली, तब जेसी खुश हुआ। अब निमोनिया चला गया था, और अब वो बाहर दौड़ने में सक्षम था। दौड़ना जेसी के लिए एक खास मायने रखता था। शायद इसलिए क्योंकि जेसी के पिताजी, पूरी काउंटी में सबसे तेज़ धावक थे।

रविवार के दिन, चर्च के बाद, कुछ पड़ोसी आपस में मिलकर आराम करते थे। वे इधर-उधर बैठकर गप्पे लगाते थे या फिर बाइबिल के गीत गाते थे। अच्छे मौसम में पुरुष, आपस में दौड़ लगाते थे। मिस्टर ओवेन्स हर रेस जीतते थे। उसे देख जेसी को बड़ा गर्व होता था। वो अपने पिता को एक खेतिहर मज़दूर की बजाय एक धावक के रूप में देखना पसंद करता था। जेसी को धावक की दुनिया बहुत मुक्त लगी। उसके बाद से जेसी की दुनिया में बस एक ही इच्छा थी - वो भी एक धावक बनना चाहता था।

दौड़ना, जेसी के लिए एकमात्र मज़े का खेल था। उसके पास कोई खिलौने या खेल नहीं थे। आस-पास उसकी उम्र का कोई बच्चा भी नहीं था, और उसके भाई-बहन हर दिन माता-पिता के साथ खेतों में काम करते थे। चूंकि ओकविले में अश्वेत बच्चों के लिए कोई स्कूल नहीं था, इसलिए जेसी स्कूल नहीं जा सकता था।

लंबे समय से, ओवेन्स दंपत्ति ने शेयर-क्रॉपिंग के कष्ट भरे जीवन से भागने की बात सोची थी। वे उत्तर की ओर जाना चाहते थे, जहाँ बेहतर जीवन जीने के कुछ अवसर उपलब्ध थे।

लेकिन जेसी के माता-पिता डरते थे। ओकविले ही एकमात्र ऐसा शहर था जिसे वे जानते थे। वे कुछ ही मील की दूरी पर बसे डेकाटूर शहर से आगे कभी नहीं गए थे। वे उत्तर में किसी को भी नहीं जानते थे, और वे वहां की अज्ञात दुनिया से डरते थे।

हर बार चर्चा और बहस के बाद मिस्टर और मिसेज ओवेन्स, ओकविले में रहने का फैसला लेते। फिर, फरवरी 1921 में, दो कारणों से वे अपने दिमाग को बदलने के लिए मज़बूर हुए।

इसमें सबसे पहले जेसी का निमोनिया था। इससे बदतर निमोनिया उसे पहले कभी नहीं हुआ था। आठ साल का बच्चा अब हर खांसी के साथ लगातार खून थूक रहा था। माँ को लगा कि वो अगली सर्दी तक ज़िंदा नहीं बचेगा।

उसी महीने मिस्टर क्लैनन ने मिस्टर ओवेन्स की कमाई का एक बड़ा हिस्सा ज़प्त करने का फैसला किया। जब मिस्टर ओवेन्स ने उसका विरोध किया तो मिस्टर क्लैनन ने कहा कि किसी शेयरक्रॉपर को उससे अधिक हक नहीं मिल सकता था। उनके पास दो ही विकल्प बचे थे - मिस्टर क्लैनन की शर्तों को मानना, या फिर वहां से छोड़ कर चले जाना।

अगले दो दिनों तक मिस्टर ओवेन्स ने किसी से बातचीत नहीं की। फिर रविवार को, चर्च के बाद, उन्होंने अपने परिवार को सब कुछ बताया, और साथ में अपना फैसला भी बताया। फिर ओवेन्स परिवार ने उत्तर की ओर जाने का निश्चय किया।

पांच खच्चरों और खेत के औजारों को बेचने के बाद, ओवेन्स परिवार को थोड़े पैसे मिले। इससे उन्होंने ट्रेन टिकट खरीदे। मिस्टर ओवेन्स को अगली नौकरी मिलने तक खर्च के लिए अभी भी उनके पास कुछ पैसे बचे थे।

परिवार ने क्लीवलैंड, ओहियो को अपने नए घर के रूप में चुना। वे क्लीवलैंड में किसी को नहीं जानते थे, लेकिन उन्होंने सुना था कि वो रहने और काम करने के लिए एक अच्छी जगह थी। 1921 के वसंत में, ओवेन्स परिवार ने अपना कुछ सामान पैक किया और फिर राष्ट्रीय रेलमार्ग उन्हें उत्तर में ले गया। क्लीवलैंड पहुंचने के बाद उन्होंने शहर के पूर्व में तीन मंजिले एक लकड़ी के घर में एक छोटा सा अपार्टमेंट किराए पर लिया।

यह युवा जेसी के लिए एक रोमांचक नई दुनिया थी। वहां फुटपाथ थीं, पक्की सड़कें, और बहुत सारे घर थे! हर जगह लोग ही लोग थे। उनके नए अपार्टमेंट में पानी और बिजली दोनों थे।

घर से उत्तर की ओर चलने पर जेसी, शानदार एरी झील पर पहुँच जाता था। वहां वो सामान और माल लोड की गई नावों को देखता जो दूर-दराज़ के शहरों को जा रही होतीं। अगर वह पूर्व दिशा में जाता, तो वहां वो एक सुंदर पार्क में पहुँचता। वहां एक तालाब था जहां बच्चे पत्थरों पर कूदते थे और कागज़ की नावों को तालाब में तैराते थे।

जेसी के घर के दक्षिण और पश्चिम में स्टोर थे, ट्रॉली कारें थीं और रात भर सिनेमाघरों की लाइटें सड़कों पर जलती थीं।

सबसे अच्छा हुआ कि अब जेसी ने स्कूल शुरू किया। वह सेंट क्लेयर ग्रामर स्कूल में गया। स्कूल में पहले दिन उसके उत्साह का ठिकाना नहीं था। जब टीचर ने उस शर्मीले लड़के से उसका नाम पूछा, तो वह फुसफुसाया, "जे. सी. मैम।" टीचर मुस्कुराई और उसने कहा, "नए स्कूल में तुम्हारा स्वागत है जे. सी.।" युवा जेसी बहुत घबराया हुआ था और उसे अपना सही नाम बताने की हिम्मत ही नहीं हुई। फिर स्कूल में उसका नाम हमेशा के लिए जेसी ओवेन्स के नाम से दर्ज़ हो गया। जेसी को अपने नाम का उच्चारण पसंद था इसलिए सारी ज़िन्दगी उसने वही नाम इस्तेमाल किया।

जेसी को स्कूल में बहुत मज़ा आया। उसने लिखना-पढ़ना सीखा और हिसाब-किताब भी। अब उसकी उम्र के उसके कई दोस्त थे. उससे भी वो बहुत खुश था। जेसी को बस एक बाद का दुःख था कि स्कूल ख़त्म होने के बाद वो अपने दोस्तों के साथ नहीं खेल पाता था। ग्रामर स्कूल में जाने के बाद भी जेसी को अपने परिवार की मदद के लिए कोई काम करना पड़ता था।

ओवेन्स परिवार को जैसी उम्मीद थी क्लीवलैंड में जीवन उतना आसान नहीं था। मिस्टर ओवेन्स के पास कोई औपचारिक शिक्षा या कौशल नहीं था, इसलिए उन्हें एक स्थाई नौकरी नहीं मिल सकती थी। इसलिए मिसेज़ ओवेन्स और बच्चों को काम करना ज़रूरी था। कुछ दिनों में, जैसे ही जेसी ने स्कूल खत्म किया, उसने एक स्थानीय फूल की दुकान में डिलीवरी-बॉय का काम किया। फिर उसे एक गैसोलीन स्टेशन पर काम मिला। उसने किराने की दुकान, जूते पॉलिश करने के साथ-साथ जो भी काम मिला वो किया। अब जेसी की तबियत अलबामा से बेहतर थी, हालांकि वह अभी भी बहुत दुबला-पतला था। जेसी के पतलेपन के बावजूद, उसके बारे में कुछ ऐसा था जिसने कोच चार्ल्स रिले-जेसे को उसकी ओर आकर्षित किया। कोच ने दोपहर की छुट्टी में जेसी को स्कूल के मैदान में दौड़ते हुए देखा। मिस्टर रिले, जेसी के स्कूल में खेल-कूद के शिक्षक थे। वो फेयरमोंट जूनियर हाई स्कूल और ईस्ट टेक्निकल हाई स्कूल में ट्रैक कोच भी थे।

1923 के पतझड़ में, कोच रिले ने दस वर्षीय जेसी से पूछा कि क्या वह ट्रैक टीम में शामिल होना चाहेगा।

जेसी ने रोमांचित होकर "हाँ!" कहा। सिर्फ एक समस्या थी - स्कूल ख़त्म होने के बाद ही टीम अभ्यास करती थी। जेसी को स्कूल के बाद काम करने के लिए जाना पड़ता था। कोच रिले ने इसका एक समाधान निकाला। उन्होंने जेसी से अभ्यास के लिए स्कूल शुरू होने से से पैंतालीस मिनट पहले आने को कहा। जेसी के कॉलेज जाने तक यह दिनचर्या ज़ारी रही।

शुरू में जेसी कुछ देर दौड़ने के बाद ही थक जाता था. कभी-कभी जेसी दौड़ना छोड़ने की बात भी सोचता था। उसे ऐसा लगता था कि वो कभी भी कोई महत्वपूर्ण रेस नहीं जीत पायेगा।
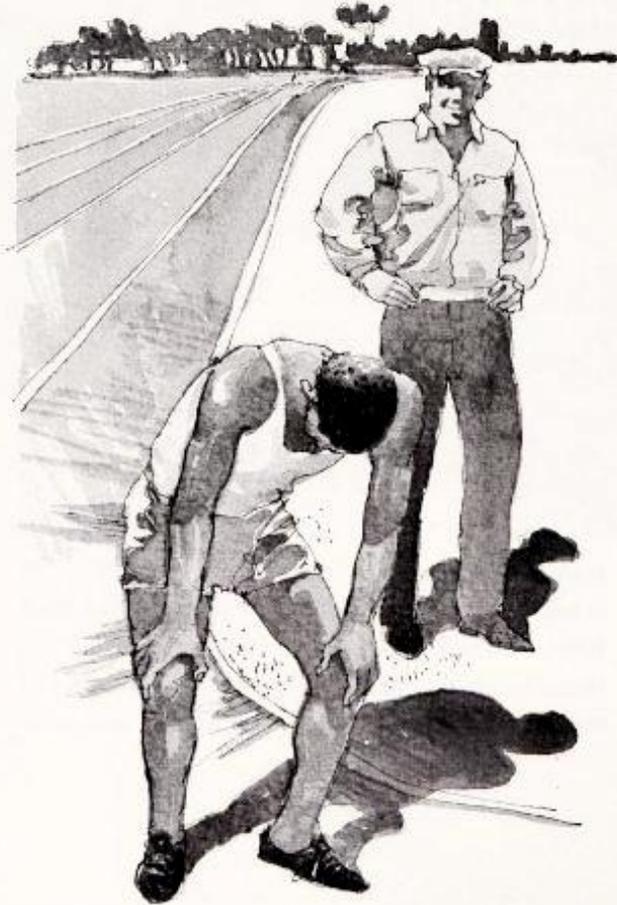
हर बार जब जेसी ने छोड़ने की बात उठाई तो कोच रिले ने उससे धीरज रखने को कहा. "देखो, तुम चार साल बाद होने वाली रेस के लिए अभ्यास कर रहे हो - वो बड़ी रेस अगले शुक्रवार से पूरे चाल साल बाद ही होगी।" यह कोच रिले और जेसी के बीच एक मजाक बन गया।

जब जेसी फेयरमोंट जूनियर हाई स्कूल में पढ़ रहा था, तब उसने पहली अंतर-स्कोलास्टिक ट्रैक मीट में भाग गया। क्लीवलैंड के सभी जूनियर हाई स्कूलों के सर्वश्रेष्ठ धावक उस रेस में होंगे, यह सोचकर जेसी घबराया। लेकिन उसकी घबराहट तत्काल गायब हो गई। स्टार्ट की बंदूक बजने के साथ वो बहुत तेज़ी से दौड़ा और बाकी प्रतिद्वंदियों को कई गज पीछे छोड़कर उसने सौ-यार्ड की रेस जीती।

दौड़ के बाद, मिस्टर रिले ने जेसी की मां से कहा, "इस धरती पर आपके बेटे के सबसे असामान्य पैर हैं। मुझे पता है कि यह बात आपको चौंका देगी, लेकिन किसी दिन जेसी ओलंपिक चैंपियन बन सकता है।" बहुत साल बाद ही माँ ने जेसी को, कोच की भविष्यवाणी के बारे में बताया। पर तब तक, कोच रिले की भविष्यवाणी सच हो चुकी थी।

जब वह जूनियर हाई स्कूल में था, तब जेसी ने ओलंपिक गौरव की ओर एक महत्वपूर्ण कदम उठाया। उसने दस सेकंड में सौ गज की दौड़ लगाई, और यह रिकॉर्ड इतना उल्लेखनीय था कि अगले दिन क्लीवलैंड के समाचार पत्रों में यह खबर छपी।

वो असाधारण धावक लगातार सुधार करता रहा। उसने कोच रिले के साथ एक तेज शुरुआत करने के लिए कड़ी मेहनत की। ईस्ट टेक्निकल हाई स्कूल ट्रैक टीम के सदस्य के रूप में, जेसी हर डैश और रिले-रेस में अव्वल नंबर पर रहा। इसके बाद, उसने बाधा दौड़ (हर्डल्स) भी शुरू कीं।

हर्डल्स में धावक को बाधाओं की एक श्रृंखला पर छलांग लगानी होती है। ये अवरोध तीन फीट से थोड़े ऊंचे होते हैं। हर्डलिंग में गति के साथ-साथ सही समय भी ज़रुरी होता है, और जेसी इस खेल में भी,जल्दी ही विजेता बन गया।

आगे, कोच रिले के सुझाव पर, जेसी ने ब्रॉड-जम्प का भी अभ्यास किया। इस खेल को अब लॉन्ग-जम्प के नाम से जाना जाता है. इसमें एक प्रतियोगी जमीन पर पड़े एक बोर्ड की ओर दौड़ता है, फिर बोर्ड पर एक पैर रखकर आगे छलांग लगाता है। छलांग का अंत एक रेतीले स्थान पर होता है जिसे गड्ढा कहते हैं। छलांग की दूरी को बोर्ड से गड्ढे में जहाँ प्रतियोगी गिरा वहां तक मापा जाता है। जल्द ही जेसी एक उत्कृष्ट लॉन्ग-जम्पर बन गया और ट्रैक स्टार भी बन गया।

1933 तक, जेसी ओवेन्स की प्रतिष्ठा पूरे राज्य में फ़ैल गई थी। उस वर्ष, इंटरनेशनल स्कोलस्टिक चैंपियनशिप प्रतियोगिता, शिकागो विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाली थी। जेसी थोड़ा घबराया हुआ था। उस दिन देश भर के खेल लेखकों और कोचों के सामने, कड़ी प्रतिस्पर्धा होने जा रही थी।
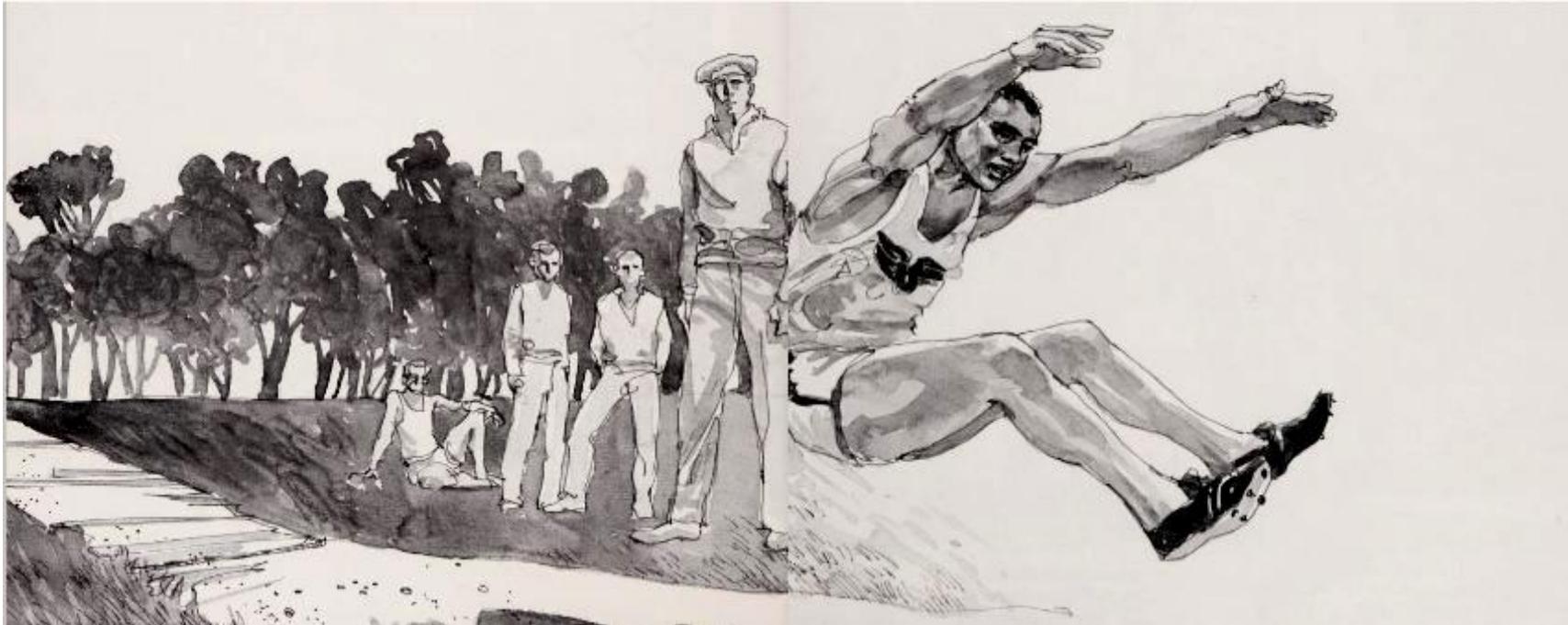
उस दिन जो हुआ वह अब ट्रैक और फील्ड में एक बड़ा कीर्तिमान बन चुका है। जेसी ओवेन्स ने 9.4 सेकंड में सौ गज का डैश जीतकर विश्व का इंटर-स्कोलास्टिक रिकॉर्ड स्थापित किया। उसने लॉन्ग-जम्प में 24-फीट, 9 और 5/8 इंच की छलांग लगाईं और 20.7 सेकंड में 220-यार्ड डैश में नया कीर्तिमान स्थापित किया। एक खेल लेखक के शब्दों में - यह एक अभूतपूर्व "ट्रिपल" था।
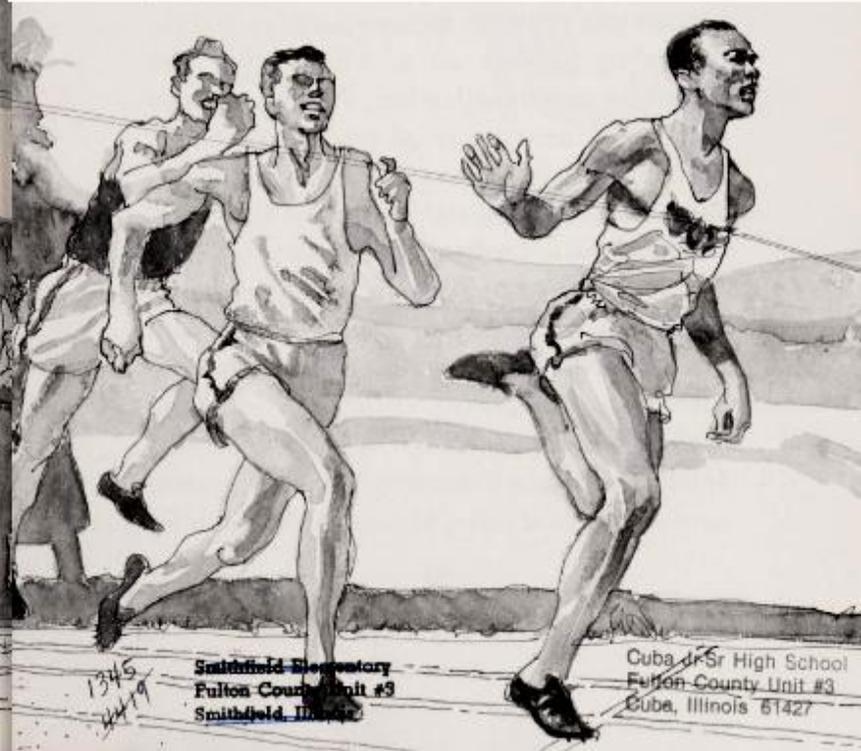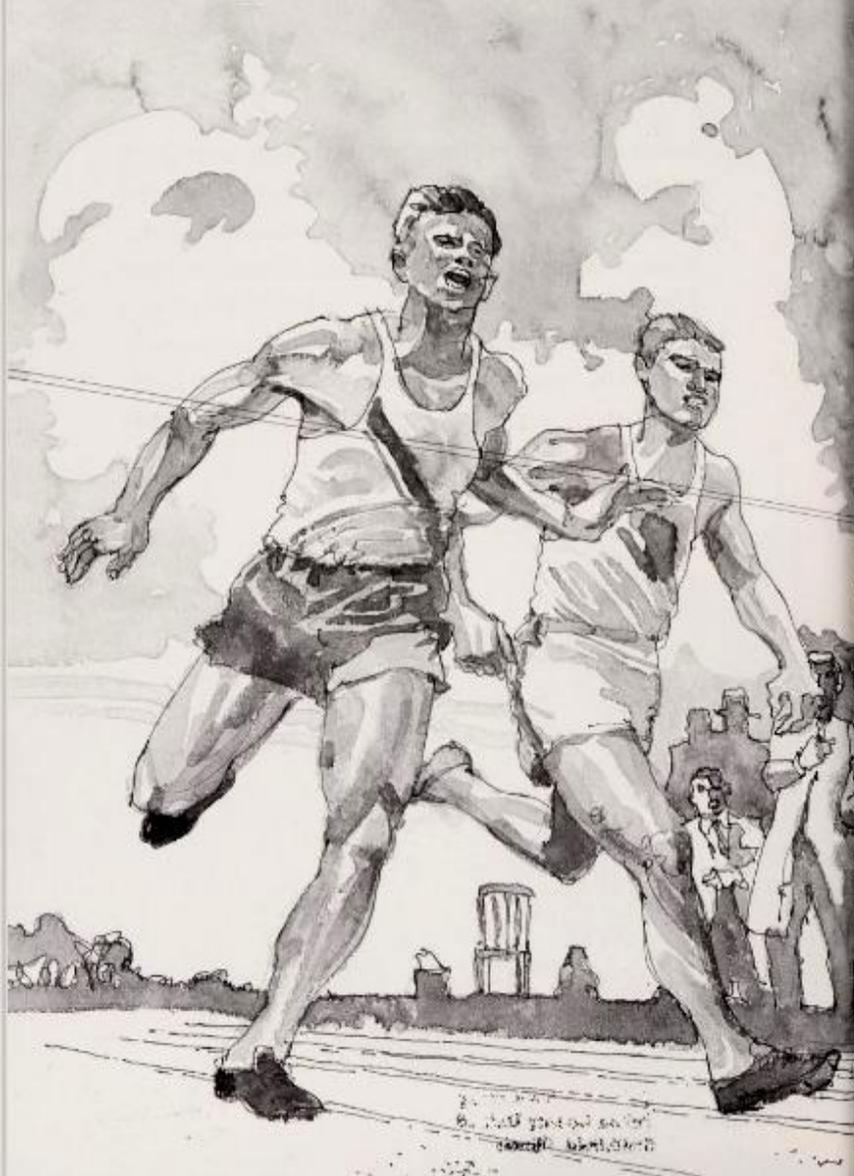
जब जेसी ने हाई स्कूल पास किया तब पूरे अमेरिका के कॉलेजों ने उसे छात्रवृत्ति देने की पेशकश की। बेटे को यह सुअवसर मिलने पर उसके माता-पिता खुश थे। जीवन कठिन होने की अब उन्हें कोई परवाह नहीं थी। क्लीवलैंड आने की उनकी चाल वाकई में सफल हुई थी। अपने परिवार में कॉलेज जाने वाला जेसी पहला व्यक्ति था।

जेसी कॉलेज स्तर पर प्रतिस्पर्धा का मौका पाने को उत्सुक था। लेकिन उसे कुछ परेशान कर रहा था। समय बीतता गया, पर उसने किसी भी कॉलेज का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। कोच रिले को इस पर आश्चर्य हुआ और उन्होंने जेसी से इसका कारण पूछा। जेसी ने कहा कि माता-पिता को संघर्ष में छोड़कर उसका जाना बहुत स्वार्थीपना होगा। परिवार को उन पैसों की ज़रुरत भी थी जो जेसी अपनी तीन नौकरियों से कमाता था। कोच रिले ने जेसी को इसकी चिंता न करने को कहा।

एक हफ्ते बाद, मिस्टर रिले ने जेसी को एक अच्छी खबर दी। ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी, जेसी को दाखिला देगी। यूनिवर्सिटी, एथलेटिक छात्रवृत्ति प्रदान नहीं करती थी, पर स्कूल के अधिकारी जेसी के लिए नौकरी की व्यवस्था करेंगे ताकि वह अपने रहने-खाने और ट्यूशन का भुगतान कर सकें।

ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी के ट्रैक कोच, लैरी स्नाइडर ने जेसी के पिता के लिए नौकरी भी खोजी। मिस्टर ओवेन्स की नौकरी स्थायी थी और उसका जेसी के कॉलेज में पढ़ने से कुछ सम्बन्ध नहीं था। यही बात जेसी सुनना चाहता था। वह अब ओहियो राज्य जाने को अधीर था।

अपने कॉलेज के वर्षों के दौरान ही जेसी ओवेन्स की साख दुनिया भर में जम गई थी। 25 मई, 1935 को मिशिगन विश्वविद्यालय में आयोजित नेशनल कॉलेजिएट ट्रैक एंड फील्ड चैंपियनशिप में उन्होंने सबसे बड़ा ट्रैक प्रदर्शन दिखाया। उस दिन सौ गज के डैश में जेसी ने एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाया। उन्होंने 220-गज बाधा-दौड़ (हर्डल्स) में भी एक नया विश्व रिकॉर्ड बनाया और लॉन्ग-जम्प में भी नए विश्व रिकॉर्ड का कीर्तिमान स्थापित किया। उनकी लॉन्ग-जम्प इतनी लंबी थी कि उस रिकॉर्ड को पच्चीस साल तक कोई नहीं तोड़ पाया।

जेसी का यह प्रदर्शन 1936 के ओलंपिक खेलों एक लिए एक पूर्वावलोकन था। बर्लिन, जर्मनी में आयोजित उन खेलों में, जेसी ओवेन्स ने चार स्वर्ण पदक जीतकर ट्रैक-एंड-फील्ड एक्शन में अपना वर्चस्व कायम किया। उन्होंने सौ-मीटर डैश और दो-सौ-मीटर डैश में पहला स्थान हासिल किया और चार-एक-सौ-मीटर रिले टीम के लिए अंतिम एंकर के रूप में दौड़े। जेसी ने लॉन्ग-जम्प में चौथा स्वर्ण पदक प्राप्त किया। यह जीत उनके दिल को सबसे प्रिय थी और उसके सही कारण भी थे।

1936 में, जर्मनी पर नाजियों का शासन था, जिसके नेता तानाशाह एडोल्फ हिटलर थे। नाजियों का मानना था कि अन्य सभी नस्लों के लोग उनसे तुच्छ थे। जब ओलंपिक खेल शुरू होने वाले थे तब जर्मन अखबारों ने अमेरिकी टीम के अश्वेत सदस्यों को हीन बताया। इसने सामान्य रूप से शांत ओवेन्स को भी प्रभावित किया।

पहला खेल में जेसी ओवेन्स को लॉन्ग-जम्प में भाग लेना था। वो नाजी अपमान से परेशान था और उसे ध्यान केंद्रित करने में परेशानी हुई। मामले को बदतर बनाने के लिए, ओवेन्स का मुख्य प्रतिद्वंद्वी - लूज लॉन्ग नाम का एक जर्मन था। वो एक ऊंचे कद का बढ़िया एथलीट था और उसे जर्मन श्रेष्ठता के एक आदर्श उदाहरण के रूप में सराहा जा रहा था। ऐसा लग रहा था कि वो प्रतियोगिता जर्मन लोगों को एक मास्टर नस्ल के रूप में साबित करने के लिए आयोजित की गई थी।

क्वालिफाइंग दौर में जेसी ओवेन्स ने जब दो खराब छलांगें लगाईं तो ऐसा लगा जैसे नाज़ी जीत जाएंगे। जबकि लॉन्ग ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। पर जब जेसी ओवेन्स क्वालिफाई करने के आखिरी राउंड में आया, लूज लॉन्ग उसके पास आया।

"हेलो, जेसी ओवेन्स," लॉन्ग ने कहा। "मैं चाहता हूँ कि आप फाइनल में पहुंचें। लेकिन आप पहले कुछ आराम करें, और कुछ बातें याद रखें। आपको क्वालिफाइंग दौर में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दिखाने की जरूरत नहीं है। इसमें आपको सिर्फ क्वालीफाई ही करना है।" लॉन्ग ने ओवेन्स को सुरक्षित तरीके से कूदने की एक अच्छी सलाह दी।

ओवेन्स ने लॉन्ग की सलाह मानी और एक अच्छी छलांग लगाई। ओवेन्स, लॉन्ग की मदद का आभारी था। लेकिन यहाँ कूदने की सलाह से भी ज़्यादा कुछ महत्वपूर्ण बात थी। नाजी अधिकारियों की भीड़ के सामने, लॉन्ग ने एक अश्वेत अमेरिकी से दोस्ती की पेशकश की थी। साहस, मानवता और खेल कौशल के इस प्रदर्शन ने जेसी ओवेन्स पर एक गहरी छाप छोड़ी।

लम्बी छलांग के फाइनल में जेसी को इस एहसान को वापस करने का मौका एक मौका मिला। लॉन्ग एक उत्कृष्ट छलांग लगाने के बाद, अपने दर्दनाक पैर को पकड़कर एक तरफ चला। ओवेन्स, तेज़ी से उसकी ओर गया। नाजी अधिकारी सिर्फ देखते रहे पर ओवेन्स ने दर्द को कम करने के लिए लॉन्ग के घायल पैर की देर तक मालिश की।

जेसी ओवेन्स ने 26 फीट, 5 और 5/16 इंच की रिकॉर्ड छलांग के साथ लॉन्ग-जम्प की प्रतियोगिता जीती। उसने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। जेसी ओवेन्स और लॉन्ग में गहरी दोस्ती हुई, जो द्वितीय विश्व युद्ध में, लूज लॉन्ग के मारे जाने पर ही समाप्त हुई।

ओलंपिक में शानदार प्रदर्शन के बाद जेसी ओवेन्स का अमेरिका में एक हीरो जैसे स्वागत किया गया। इसकी शुरुआत न्यूयॉर्क सिटी में उसके सम्मान में एक बड़ी परेड के साथ हुई। सभी ने उस महान एथलीट और बढ़िया युवा व्यक्ति का सम्मान किया। सम्मान और प्रशंसा का यह सिलसिला जेसी के जीवन भर ज़ारी रहा।

अपने बाद के सालों में, जेसी ओवेन्स ने अमेरिकी आयोगों में युवा लोगों को प्रेरित करने और एक गुडविल-राजदूत के रूप में कार्य किया। 30 मार्च, 1980 तक अपनी मृत्यु तक जेसी ओवेन्स ओलंपिक गतिविधियों में भी शामिल रहे। उन्हें बीसवीं शताब्दी के पहले भाग में "दुनिया का सबसे तेज इंसान" माना गया। हालांकि बाद में जेसी ओवेन्स के सभी रिकॉर्ड एक के बाद एक करके टूटे, लेकिन उनका प्रदर्शन आज भी खेल इतिहास का एक स्थायी हिस्सा है!

समाप्त